जनवरी 2018 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्तसंस्कार

मानव मंदिर मिशन के 36वें वार्षिक अधिवेशन पर पूज्य गुरूदेव का आशीर्वचन–उद्बोधन व कार्यक्रमों की अन्य छलकियां।

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्‌विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

समय क्या है?

लाओत्से कहता है कि इसे ही हम रहस्य कहते हैं। जान भी लेते हैं, फिर भी अनजाने रह जाते हैं। सब जान लेते हैं, फिर भी पातें हैं कि सब अनजाना रह गया। अस्तित्व चारों तरफ मौजूद है। भीतर, बाहर वही है। रोएं-रोएं में, श्वास-श्वास में वही व्याप्त है। फिर भी अनजाना है। क्या जाना है? 03

श्रद्धा के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ श्रद्धा की उपस्थिति जरूरी

श्रद्धा का अपना महत्व है, किंतु श्रद्धा की शुद्धता को कायम रखना जरूरी है। इसकी शुद्धता तभी संभव है, जब उसके साथ ज्ञान जुड़े। श्रद्धा के बिना ज्ञान संशय बन जाता है। वह हमें किसी भी निर्णय तक नहीं पहुंचाता। ज्ञान के बगैर श्रद्धा अंधी हो जाती है। वहां सारा चिंतन ही जड़ता को प्राप्त हो जाता है। इसलिए श्रद्धा के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ श्रद्धा का होना जरूरी है। 04

सम्यक् बोध

कुछ बातें सुनी-सुनाई और पढ़ी-पढ़ाई होती हैं, उनके प्रति वैसी ही धारणाएं बन जाती हैं। किन्तु वह धारणा मान्यता की होती है, ज्ञान की नहीं। किसी भी अच्छी या बुरी वस्तु का वास्तव में यदि ज्ञान हो जाए तो उस अच्छी वस्तु को व्यक्ति कभी छोड़ नहीं सकता और बुरी वस्तु को कभी अपना नहीं सकता। 07

आत्म-जागृति से ही संभव है मुक्ति का मार्ग

आज हमारे पास कान तो हैं लेकिन हम ठीक से सुनते नहीं। आंखें तो हैं लेकिन अच्छा देखते नहीं। अपने मुख से मीठी वाणी निकले न जाने कितने दिन बीत जाते हैं? बस यही मनुष्य की सुषुप्तावस्था है। इसे जागृत करने को आवश्यकता है। 17

संत-वाणी

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो या खीज,
खेत पड्यो उगै सही उलटो-सुलटो बीज।

बोध-कथा

दान का सुख

एक बार महात्मा बुद्ध उपदेश दे रहे थे, 'देश में अकाल पड़ा है। लोग अन्न एवं वस्त्र के लिए तरस रहे हैं। उनकी सहायता करना हर मनुष्य का धर्म है। आप लोगों के शरीर पर जो वस्त्र हैं, उन्हें दान में दे दें।' यह सुनकर तो कुछ लोग तुरंत सभा से उठकर चले गए तो कुछ आपस में बात करने लगे, 'यदि वस्त्र इन्हें दे दें, तो हम क्या पहनेंगे? उपदेश के बाद सभी श्रोता चले गए किंतु निरंजन बैठा रहा। वह सोचने लगा, 'मेरे शरीर पर एक वस्त्र है। अगर मैं अपने वस्त्र दे दूंगा तो मुझे नग्न होना पड़ेगा।' फिर सोचा- मनुष्य बिना वस्त्र के पैदा होता है। और बिना वस्त्र के ही चला जाता है। साधु-संन्यासी भी बिना वस्त्र के रहते हैं। यह सोचकर निरंजन ने अपनी धोती दे दी। बुद्ध ने उसे आशीर्वाद दिया। निरंजन अपने घर की ओर चल पड़ा। वह खुशी से चिल्ला कर कह रहा था, 'मैंने अपने आधे मन को जीत लिया।' उसी वक्त उसी ओर से महाराज प्रसेनजित चले आ रहे थे। निरंजन की बात सुनकर उन्होंने उसे बुलाया और पूछा- 'तुम्हारी बात का क्या अर्थ है?' निरंजन ने उत्तर दिया, 'महाराज! महात्मा बुद्ध दुखियों के लिए दान में वस्त्र मांग रहे थे। यह सुनकर मेरे एक मन ने कहा कि शरीर पर पड़ी एकमात्र धोती दान में दे दो, परंतु दूसरे मन ने कहा कि यदि यह भी दे दोगे तो पहनोगे क्या? आखिर दान देने वाले मन की विजय हुई। मैंने धोती दान में दे दी। अब मुझे गरीबों की सेवा के सिवा कुछ नहीं चाहिए।' यह सुनकर राजा प्रसेनजित ने अपना राजकीय परिधान उतारकर निरंजन को दे दिया। मगर राजा का परिधान भी निरंजन को अपने लिए व्यर्थ लगा। उसने राजा के शाही परिधान को भी महात्मा बुद्ध के चरणों में डाल दिया। बुद्ध ने निरंजन को सीने से लगाते हुए कहा, -जो दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे देता है, उसकी साधना/आराधना ही सर्वोत्तम है।

समय क्या है?

संत अगस्तीन से कोई पूछता है कि समय क्या है? व्हाट इज टाइम? अगस्तीन कहता है कि जब तक मुझसे कोई नहीं पूछता है, मैं भलीभांति जानता हूं, और जब कोई पूछता है, सब गड़बड़ हो जाता है। आप भी जानते हैं कि समय क्या है, भलीभांति जानते हैं। समय से उठते हैं। अगर न जानते तो समय से उठते कैसे? न जानते तो समय से घर पर कैसे पहुंचते? न जानते तो कैसे तय करते कि समय हो गया? जानते जरूर हैं कि समय क्या है। लेकिन अगस्तीन ने ठीक कहा है कि जब तक मुझसे कोई नहीं पूछता, तब तक मैं बिलकुल जानता हूं कि व्हाट इज टाइम, और तुमने पूछा और सब खो जाता है। कोई पूछे कि क्या है समय तो आज तक बुद्धिमान से बुद्धिमान आदमी उत्तर नहीं दे पाया। और ऐसे बुद्धिमान से बुद्धिमान आदमी समय का उपयोग कर रहा है। ऐसे मूढ़ से मूढ़ आदमी समय में जी रहा है। और बुद्धिमान आदमी इशारा नहीं कर सकता कि यह है समय।

समय थोड़ी जटिल बात है। जीवन कहीं भी जटिल नहीं है। हम सब जी रहे हैं। हमने काफी जी लिए हैं। जो जानते हैं, वे कहते हैं, हजारों-हजारों जन्म हमने जिए हैं। छोड़ें उन्हें भी। इतना ही जान लें कि हम एक जन्म ही जीए हैं। पचास साल, चालीस साल, बीस साल, आठ साल जी लिए हैं। जीवन को जाना है। लेकिन अगर कोई पूछे कि जीवन क्या है तो हम चूक जाते हैं। क्या हो जाता है? जीवन क्या है? जब जी लिए हैं तो बताना चाहिए।

लाओत्से कहता है कि इसे ही हम रहस्य कहते हैं। जान भी लेते हैं, फिर भी अनजाने रह जाते हैं। सब जान लेते हैं, फिर भी पातें हैं कि सब अनजाना रह गया। अस्तित्व चारों तरफ मौजूद है। भीतर, बाहर वही है। रोएं-रोएं में, श्वास-श्वास में वही व्याप्त है। फिर भी अनजाना है। क्या जाना है?

ये लहरें समुद्र की, लाखों साल से इस तट पर टकरा कर गिर रही हैं। तट को अभी तक ये लहरें जान न पाई होंगी कि क्या है? और न यह तट जान पाया होगा कि ये लहरें क्या हैं? लहरों को छोड़िए। आप भी लाख वर्षों तक इन्ही तटों से टकराते रहें, तो भी इतना ही जान पाएंगे, जितना लहरें जान पाई हैं। हम क्या जान पाते हैं? एक ऊपरी परिचय, एक अक्वेन्टेन्स हो जाता है, और उस ऊपरी परिचय को हम कहने लगते हैं ज्ञान।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

श्रद्धा के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ श्रद्धा की उपस्थिति जरूरी

भगवान महावीर ने साधना का एक गहरा रहस्य खोलते हुए कहा- जैसे धागा पिरोई सुई हाथ से गिर जाने पर भी गुम नहीं होती, वैसे ही ज्ञान के धागे में पिरोया हुआ यह जीवात्मा संसार में गुम नहीं होता। आज इस पर विचार करना बहुत जरूरी है।

यह बहुत अच्छी बात है कि आज श्रद्धा और अंधश्रद्धा को लेकर काफी बहस हो रही है। धर्म जगत में श्रद्धा पर इतना बल दिया जाता रहा है कि वह अपनी शुद्धता खोकर अंधश्रद्धा में बदलती जा रही है। श्रद्धा का अपना महत्व है, किंतु श्रद्धा की शुद्धता को कायम रखना जरूरी है। इसकी शुद्धता तभी संभव है, जब उसके साथ ज्ञान जुड़े। श्रद्धा के बिना ज्ञान संशय बन जाता है। वह हमें किसी भी निर्णय तक नहीं पहुंचाता। ज्ञान के बगैर श्रद्धा अंधी हो जाती है। वहां सारा चिंतन ही जड़ता को प्राप्त हो जाता है। इसलिए श्रद्धा के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ श्रद्धा का होना जरूरी है। आज शिक्षा का विस्तार खूब हो रहा है। सरकार हो या स्वयंसेवी संस्थाएं या फिर माता-पिता, सब अपने-अपने तरीकों से इस काम को अंजाम तक पहुंचा रहे हैं। शिक्षा के साथ ज्ञान का विस्तार होना लाजमी है। लेकिन इसके साथ ही वह अपनी पहचान भी खोता जा रहा है। कारण यह है कि आज की शिक्षा का अधिक ध्यान बौद्धिक विकास पर है। हृदय पक्ष की दृष्टि से आज का शिक्षा-विज्ञान सर्वथा उदासीन है। बुद्धि का विषय है चिंतन और हृदय का विषय है भावनाएं। भावना-शून्य चिंतन में स्वार्थ प्रधान हो जाता है। भावनाएं ही हैं जो आदमी को आदमी से जोड़ती है।

विज्ञान चांद के बाद मंगल से जुड़ गया है। वहां से धरती की दूरी सिमट रही है। लेकिन संवेदना-शून्य विज्ञान के विकास के कारण आदमी और आदमी की दूरी आज बढ़ती जा रही है। आज की शिक्षा में हृदय सिकुड़ता जा रहा है, दिमाग बड़ा होता जा रहा है। हम कल्पना करें एक ऐसे शरीर की

जिसमें सिर का भाग बहुत बड़ा हो और शेष शरीर अविकसित ही रह गया हो। आज की शिक्षा का स्वरूप यही बनता जा रहा है। भारतीय संस्कृति में विद्या की निष्पत्ति विनय है। लेकिन आज की शिक्षा-प्रणाली में विद्या की निष्पत्ति अहंकार में देखी जाती है। विद्या-विकास के साथ व्यक्ति का अहंकार टूटना चाहिए।

भारतीय मनीषा ने हमेशा उस ज्ञान को महत्व दिया जो हमें अपने विराट अस्तित्व से जोड़े। क्योंकि तब यह जीवात्मा संसार मोह में नहीं बंधेगा। धागे में पिरोई हुई सुई की तरह वह संसार में गुम नहीं होगा। ज्ञान वह तीसरा नेत्र है जिससे शिव ने कामदेव को भस्म किया था। ज्ञान के बिना श्रद्धा अंधी है और आचार विवेकहीन।

दूसरों को अपना समझने लगें तो दुनिया का संवरना मुश्किल नहीं

सैकड़ों साल पहले नदी किनारे एक सुंदर सी नगरी थी। लेकिन वहां का राजा बहुत सनकी था। एक दिन अपने महल की छत से दूर बहती नदी को देखा और मंत्री से पूछा कि यह किस दिशा से किस दिशा की ओर बह रही है? मंत्री ने कहा, पश्चिम से पूरब की ओर बह रही है।

राजा के दिमाग में कौंधा कि तब तो पूरब के राज्य भी इसके पानी का उपयोग करते होंगे। मंत्री से हां सुनते ही फरमान जारी कर दिया कि नदी के रास्ते में दीवार खड़ी कर दो। वैसा ही किया गया। कुछ दिनों में ही नदी का बहाव शहर की तरफ मुड़ गया। वहां के नागरिक त्राहि-त्राहि करने लगे। वे लोग राजा के पास जाने से डरते थे इसलिए मंत्री से गुहार लगाई।

उस जमाने में घंटा बजाकर समय का भान कराया जाता था। मंत्री ने रात तीन बजे छह का घंटा बजवा दिया। राजा बिस्तर से उठ गए। देखा बाहर घुप अंधेरा है। वह आश्चर्य में पड़ गए कि सुबह के छह बजे इतना अंधेरा कैसे! उन्होंने मंत्री से इसका कारण पूछा तो जवाब मिला कि अब सूरज अपने राज्य में नहीं आ पाएगा। नदी का पानी रुक जाने के कारण नाराज होकर पूरब के लोगों ने सूरज को इधर आने से रोक दिया है। राजा चिंतित हो गए कि तब तो अंधेरे में ही रहना होगा। घबराए राजा के अंदर डर से ही सही, विवेक का झटका आया और नदी पर बनी दीवार को तुरंत तोड़ने का आदेश दिया। जब तक दीवार टूटी, सूरज के निकलने का समय हो गया। राजा के चेहरे पर निश्चिंतता से उपजी खुशी तैर गई।

ऐसे उदाहरण आज हमारे सामने भी हैं। जीवन-जगत विवेक से चलता है, सनक से नहीं। दोनों विपरीत ध्रुव हैं। दोनों की गति अलग-अलग है। एक सन्मति की ओर ले जाता है और दूसरा अधोगति की तरफ। सनक हमेशा सामने वाले को पराजित और बर्बाद देखना चाहता है। उसका अपना होना ही सब कुछ होता है। दूसरे का होना उसे

कांटे की तरह लगता है। उसे इस बात का भी भान नहीं रहता है कि उसकी सोच या कारगुजारी से कितना बड़ा नुकसान होता है।

इसलिए हम सनक को जूनून के रूप में न देखें और न सनकियों का गौरव-गान करें। यह आस-पास और विश्व फलक पर दिखाई दे ही रहा है कि सनक ने कैसे समाज और मनुष्य के सामने डर बिठा दिया है। जिस किसी के भीतर सनकी-भाव का प्रवेश होता है, वह पहले अपना विवेक खो देता है और सही-गलत का फर्क भूल जाता है। उसमें पागल हाथी की तरह रौंदने की प्रवृत्ति आ जाती है। यही हमारी सारी समस्याओं की जड़ है। अगर हम खुद के भीतर सम्यक भाव से देखने की आदत डाल लें और दूसरों को अपना समझने लगें तो इस दुनिया को संवरने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।

गुरुदेव के प्रति

घुंघरूं छम छमा छम छम णणणणणण
बाजै रे बाजै रे
मां पांची रा लाल लाडला हिवडै विराजैरे
आपां घणा बधावां रे
सगला मंगल गावां रे
सारा हर्ष मनावां रे
घुंघरूं छम छमा छम छम णणणणणण
बाजे रे बाजै रे
1. शुभ भावा री करां आरती
मोत्या चौक पुरावां
दशूं दिशावां चंवर डुलावै
मौसम भी मुसकावै
आपां थाल बजावां रे
आपां घणां बधावां रे
घुंघरूं छम छमा छम
2. देख पुण्याई आज आपरी
ओ हिवड़ो ठरज्यावै
शब्द नहीं है कहणै सारू
पण मन है कहणो चावै
3. मौचछव आज मनावां रे
आनै घणा बधावां रे
घुंघरूं छम छमा छम
4. वार्षिक उत्सव आज आपणो
आछो अवसर आयो
मानव मंदिर में खुशियां रो
दरियो है लहरायो
आपां शंख बजावां रे
आपां मोज मनावां रे
घुंघरूं छम छमा छम
5. आगै बढ़णै रो ओ अवसर
म्हानैं आप दिरायो
रहवां सदा आभारी म्हैं
आ आशीष दिरावो
सगला कदम बढ़ावा रे
आगै बढ़ता जावां रे
जीवन सफल बणावां रे
घुंघरूं छम छमा छम छम णणणणणण
बाजै रे बाजै रे

सम्यक् बोध

○ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

रत्नत्रयी का स्वरूप

सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः

भगवान् महावीर ने सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चारित्र- इन तीनों की समन्विति को मोक्ष का मार्ग बताया है।

भगवान् ने यद्यपि 'पढमं नाणं तओ दया' - प्रथम ज्ञान और फिर आचरण का संकेत देकर ज्ञान की महत्ता को दर्शाया है। ज्ञान को प्राथमिकता दी है, फिर भी आस्था और आचरण को गौण नहीं किया है।

रत्नत्रयी का पहला रत्न है 'ज्ञान'। 'ज्ञान' का अर्थ है- यथार्थ बोध। 'यथार्थ बोधः सम्यक् ज्ञानं'। बोध किसे कहते हैं? जानने और मानने में बहुत बड़ा अन्तर है। अधिकांश व्यक्ति मानने को ही जानना कह देते हैं। कुछ बातें सुनी-सुनाई और पढ़ी-पढ़ाई होती हैं, उनके प्रति वैसी ही धारणाएं बन जाती हैं। किन्तु वह धारणा मान्यता की होती है, ज्ञान की नहीं। किसी भी अच्छी या बुरी वस्तु का वास्तव में यदि ज्ञान हो जाए तो उस अच्छी वस्तु को व्यक्ति कभी छोड़ नहीं सकता और बुरी वस्तु को कभी अपना नहीं सकता।

व्यक्ति प्रतिदिन सुनता है कि क्रोध जीवन का अहित करने वाला है, फिर भी वह समय पर गुस्सा कर लेता है। क्योंकि क्रोध को बुराई का ज्ञान व्यक्ति को अपने अनुभव से नहीं, मात्र दूसरों के कहने से है। सुनी हुई और पढ़ी हुई बात का असर स्थायी नहीं हो सकता।

समझदार व्यक्ति सांप को कभी हाथ से नहीं पकड़ता क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान है कि सांप में जहर होता है और उससे व्यक्ति मर जाता है। लेकिन छोटा बच्चा सांप को हाथ से पकड़ लेता है क्योंकि वह नादान है। उसे इस बात का होश नहीं कि सांप के काटने से व्यक्ति मर जाता है।

इस बाह्य हिताहित भी भांति आन्तरिक हिताहित का ज्ञान जिस व्यक्ति को नहीं होता, वह कभी अपना भला नहीं साध सकता। 'अज्ञानं खलु कष्टं, क्रोधा दिभ्योपि

सर्व पापेभ्य, अर्थ हित महितं वा न वेत्ति येना वृतोलोकः'– अर्थात् अज्ञान सब पापों का बात है। क्रोधाविष्ट व्यक्ति क्रोध उतरने पर फिर भी अपना हिताहित सोच सकता है, पर अज्ञान से आवृत व्यक्ति को हिताहित का विवेक कभी नहीं हो सकता।

कुछेक व्यक्ति ज्ञान की आवश्यकता को नकारते हैं। उनका तर्क है कि ज्ञान अनन्त है और व्यक्ति का जीवन सीमित। उसमें भी अनेक विघ्न-बाधाएं हैं। जीविका-संचालन के लिए किसी न किसी क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है, लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान में समय क्यों लगाया जाए? जबकि हमारे धर्म-गुरू, ऋषि-महर्षि, महात्मा लोग इसीलिए होते हैं। वे हमें समय-समय पर दिशा-दर्शन देते रहते हैं। जब कभी मार्ग-दर्शन की अपेक्षा होगी, हम सन्तों के पास चले जाएंगे। इस तरह वे अपने आपको आश्वस्त करते रहते हैं, पर वे इस बात को भूल जाते हैं कि अपनी वस्तु अपनी होती है और पराई पराई होती है। पराए ज्ञान के भरोसे स्वयं ज्ञान नहीं करने वाले व्यक्ति की वैसी ही दुर्दशा होती है जैसी कि आंख का आपरेशन न कराने से एक सेठ की हुई।

एक सेठ की दोनों आंखों की ज्योति मोतियाबिन्द के कारण चली गई। डॉक्टर ने आपरेशन की सलाह दी। सेठ ने कहा- 'इससे मुझे दर्द होगा जो कि मेरे लिए असह्य है। अगर दो आंखें न भी रहीं तो मेरे क्या फर्क पड़ता है, क्योंकि मेरी पत्नी के दो आंखें हैं, चार लड़कों की आठ आंखें हैं, चार पुत्रवधुओं की आठ आंखें हैं तथा मेरी लड़की की दो आंखें भी मेरी ही आंखें हैं, जब मेरे पास बीस आंखें हैं तब मेरी दो आंखें न होने से कौन-सा फर्क पड़ता है।' डॉक्टर ने कहा- 'अपनी अपनी होती हैं, पराई-पराई।' पर सेठ नहीं माना। एक दिन अचानक घर में आग लग गई। मकान लकड़ी का था, एक साथ धूं-धूं कर जल उठा। घर के सारे सदस्य सकुशल बाहर निकल गए, लेकिन सेठ की याद किसी को नहीं आई। जैसे ही सेठजी के पास अग्नि का ताप पहुंचा, सेठजी जोर-जोर से चिल्लाने लगे। पर अब क्या बने? स्वयं के आंखें नहीं, दूसरा कोई बाहर से लेने आए ऐसी स्थिति नहीं रही। सेठ अपनी भूल का पश्चात्ताप करता हुआ ज्वाला उगलती उस घोर अग्नि में भस्म हो गया।

यही हालत दूसरों के ज्ञान के भरोसे रहने वालों की होती है। दूसरा हर क्षण पास में नहीं होता। न जाने आदमी कब धोखा खा जाए।

बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं, जिनको स्वयं को ज्ञान नहीं होने के कारण वे पाखंडी लोगों द्वारा ठगे जाते हैं। सद्गुरू के प्रति उनको भ्रान्त बना दिया जाता है। वे यथार्थ तथ्य से विमुख हो जाते हैं। और गलत रास्ते का अनुसरण कर लेते हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह हर तरह का ज्ञान करे। फिर उस पुस्तकीय ज्ञान को अनुभव की कसौटी पर कसे और उससे अपना हित साधे व अहित से टले। कम से कम बन्धन और बन्धन के हेतु तथा मोक्ष और मोक्ष के हेतु का तो ज्ञान होना ही चाहिए।

ज्ञान करने के साथ-साथ यह तत्व भी समझना आवश्यक है कि ज्ञान किस कर्म के क्षयोपशम या क्षायक से मिलता है। ज्ञान का आवारक ज्ञानावरणीय कर्म किन कारणों से बंधता है? ज्ञान के अतिचार कौन-कौन-से हैं जिनकों जानकर छोड़ा जा सके।

किसी भी प्राणी को यथार्थ अबबोध की शक्ति ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय और क्षयोपशम से मिलती है। ज्ञानावरणीय कर्म-बन्धन के हेतु निम्नांकित हैं

1. ज्ञान प्रत्यनीकता- ज्ञान या ज्ञानी से प्रतिकूलता रखना।

2. ज्ञान निह्नव- ज्ञान तथा ज्ञानदाता का अपलाप करना।

3. ज्ञानान्तराय- ज्ञान-प्राप्ति में किसी के विघ्न डालना।

4. ज्ञान प्रद्वेष- ज्ञान या ज्ञानी से द्वेष रखना।

5. ज्ञान आशातना- ज्ञान या ज्ञानी की अवहेलना करना।

6. ज्ञान विसंवादन- ज्ञान या ज्ञानी के वचनों में विरोध दिखाना।

<u>ज्ञान के अतिचार पांच हैं जो निम्न हैं-</u>

1. सूत्र के अध्ययन में अक्षर विपर्यय होना।

2. सूत्र के अध्ययन में पद विपर्यय या यति विपर्यय (रुकने के स्थान पर न रुकना) होना।

3. एक पद का बार-बार उच्चारण करना।

4. घोष में, विनय में और बहुमान में स्खलना करना।

5. स्वाध्याय विधिवत् समयानुसार न करना।

ज्ञानावरणीय कर्म-बन्ध के हेतुओं का और ज्ञान के अतिचारों का जो वर्जन करता है उसका ज्ञान समुज्ज्वल होता है और अज्ञान का पर्दा क्रमशः क्षीण हो जाता है।

मुक्तक

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

जीवन में आए इस ठहराव को तोड़ना जरूरी है,
एक सूरजमुखी घुमाव में इसे मोड़ना जरूरी है,
सड़ने लगा है पोखर में ठहरा हुआ जो पानी
उसे अब एक नये बहाव से जोड़ना जरूरी है।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

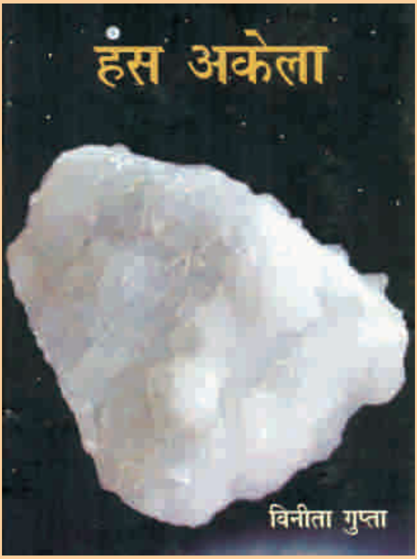

गतांक से आगे-

साधु-साध्वियों की पंक्ति को समर्पित नवदीक्षित साधु-साध्वियों की दिनचर्या बदल चुकी थी। बालक मुनि रूपचंद्र ने रात्रि भूमिशयन किया। मुनि-बाने में रूपचन्द्र की पहली रात। कार्तिक कृष्ण पक्ष, नवमी की रात। ठंडी हवा के झोंके नवदीक्षित साधु का स्वागत कर रहे थे। नीम स्याह रंग के आकाश की खिड़की से झांक कर चाँद मुनि रूपचंद्र को देख रहा था। आकाश का किशोर चाँद किशोर मुनि रूपचंद्र की तन-मन और वसन की धवलता देख उसके साथ अपना साम्य स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। चाँद-तारों की छाँव में मुनि रूपचंद्र की आँख कब लगी, उन्हें पता नहीं लगा।

किशोर मन में उत्कंठा थी, नए जीवन की भोर देखने की। गधैया जी के नोहरे में यह पहली भोर किशोर मुनि रूपचंद्र के कानों में कुछ कनबतियां कर रही थी। बस नींद खुल गई। दैनिक कार्य, जप-ध्यान और दिनों से कुछ अलग थे। सूर्य की किरणें धरती पर पड़ने से पहले ही मुनि जीवन की दिनचर्या का पहला दिन शुरू हो गया था।

आज से ही आवश्यक शास्त्रों को कंठस्थ करने का सिलसिला शुरू होना था। सूर्योदय के पश्चात् आचार्यश्री ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को अपने कक्ष में बुलाया। किसी के मुख पर आलस्य नाम की कोई चीज नहीं थी। सब ध्यान से आचार्य श्री की वाणी को दुहरा रहे थे। सर्वप्रथम सबको क्षमा-मंत्र दिया गया, जिसे सभी ने दोहराया। सभी के स्वर अलग-अलग दिशाओं में जा रहे थे-

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमन्तु मे
मित्ती में सव्व भूएसु, वेरं मज्झ ण केणई।

रूपा ने यह क्षमा-मंत्र दोहरा तो दिया

था, किन्तु वह प्राकृत भाषा के इस मंत्र का अर्थ जानना चाहता था। किशोर मुनि रूपचंद्र से रहा नहीं गया। उठा और प्रणाम निवेदित कर आचार्य श्री से पूछा- 'गुरूदेव इसका अर्थ क्या है?'

आचार्यश्री ने सहज वाणी में नवदीक्षित मुनि की जिज्ञासा शांत की- 'सभी जीव मुझे क्षमा करें, सभी जीवों को मैं क्षमा करता हूं, सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी से वैर-विरोध नहीं है।'

चूंकि सभी जैन शास्त्र अर्द्धमागधी प्राकृत में हैं, इसलिए रूपा के मन में आया कि वह प्राकृत भाषा सीखेगा। मन की बात मन में ही रहने दी और ध्यान आचार्यश्री की वाणी की ओर लगाया। आचार्यश्री प्रतिक्रमण के बाद 'दसवेआलियं' (दशवैकालिक सूत्र) के बारे में बता रहे थे। परिचय देने के बाद उन्होंने दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक की वाचना दी-

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो...

आचार्यश्री के पीछे-पीछे सभी साधुओं ने इसे भी दोहराना शुरू किया। अर्थ जाने बिना किसी भी पाठ को कंठस्थ करना मुश्किल होता है। आचार्यश्री हर श्लोक का अर्थ भी समझाते चले-

'धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप इसके रूप हैं। देव भी उसे नमन करते हैं, जिसका मन धर्म में रत है।'

लगभग एक घंटा अध्ययन का क्रम चला। फिर सभी साधु अपने-अपने कक्षों में चले गए। सभी का लक्ष्य था आज का दिया पाठ कंठस्थ करना। मुनि रूपचंद्र 'दशवैकालिक सूत्र' के श्लोकों का मनन करते हुए कंठस्थ करने की कोशिश कर रहे थे।

दस बजे तक नोहरे में श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला रोज की तरह शुरू हो गया। श्रद्धालुओं में जयचंदलाल और पाँची देवी भी थे। नोहरे में उनकी दृष्टि मुनि रूपचन्द्र पर ही थी। श्वेत वस्त्रों में जिन्हें देख बाल हंस का सा आभास हो रहा था। मुख पर असीम आभा थी। पाँची देवी का हृदय प्रसन्नता और उदासी का संगम बना हुआ था। इस संगम में अवगाहन करते हुए कब आचार्यश्री का प्रवचन समाप्त हुआ, उन्हें पता ही न चला। सब अपने-अपने घरों को लौटने लगे। पाँची देवी सबसे बाद में गधैया जी के नोहरे से निकलीं। वे मुनि रूपचन्द्र को देर तक निहारती रहीं। बेटा चाहे जो भी हो जाए, माँ के लिए तो वह हमेशा लाडला बेटा ही रहता है। पाँची देवी मन ही मन श्वेत वस्त्रधारी अपने पुत्र मुनि रूपचन्द्र की बलैयां लेती रहीं। दो घड़ी माँ और बेटे के बीच मौन संवाद हुआ। फिर भारी मन से वह घर लौट आयीं।

'मुनि रूपचन्द्र, बताओ अब हम आहार के बाद क्या भिक्षा के लिए जाएंगे?' जिज्ञासु मनोहर मुनि ने पूछा। मनोहर मुनि और

मुनि रूपचन्द्र समवयस्क थे। दोनों को आचार्यश्री ने एक साथ ही कल ही तो दीक्षा दी थी। दोनों ही मुनि जीवन की चर्या से अनभिज्ञ थे। इसलिए मन में जिज्ञासा थी। वैसे भी किशोर मन जिज्ञासाओं का सागर होता है! प्रवचन स्थल से अपने स्थान की ओर जाते हुए मनोहर मुनि ने मुनि रूपचन्द्र से पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत करनी चाही। रूपचन्द्र ने अपनी मेधा का इस्तेमाल करते हुए उत्तर दिया, हालाँकि उन्हें भी मुनि जीवन की चर्या का ज्ञान कहां था– 'आहार करने के बाद भिक्षा के लिए क्यों जाएंगे? भिक्षाटन तो आहार के लिए ही होता है ना।'

चूँकि मुनि जीवन-चर्या का पहला दिन था, इसलिए सब स्वानुभव से जानना और सीखना था। पूर्व दीक्षित वरिष्ठ साधुजन दोपहर तक भिक्षाटन से लौटे। आचार्यश्री ने अपने हाथों से नवदीक्षित साधुओं के पात्र में आहार दिया। मुनि रूपचन्द्र के मन में आहार विशेष के प्रति पहले से ही कोई चाहत नहीं थी। उनके पात्र में सांगर की सब्जी, गट्टा की रसेदार सब्जी, अरहर की दाल और दो रोटियां थीं। साथ में बालूशाही और दूध भी। अपने और मनोहर मुनि के पात्र को मुनि रूपचन्द्र ने निहारा और एक मुस्कान दोनों के चेहरे पर तैर गयी। दोनों आहार ग्रहण करने लगे। कनखियों से देखा, कहीं आचार्यश्री की नजर उन पर तो नहीं है। आचार्यश्री अन्य साधुओं को आहार दे रहे थे।

आहार करते हुए मुनि रूपचन्द्र को ख्याल आया कि यह आहार उसी तरह गृहस्थों के घर से मिला होगा, जिस प्रकार उनके माँ-पिता जी अक्सर साधुओं के पात्र में आहार डालकर पुण्य लाभ का अनुभव करते थे। उन्होंने संत भाव से आहार ग्रहण किया। जब देखा कि सबका उपक्रम समाप्त हो गया तो औरों के साथ उठ गए। हाथ धोये। सब विश्राम हेतु अपने-अपने नियत स्थान पर चले गये। आचार्यश्री अपने कक्ष में पधार गए थे।

यह विश्राम का समय था। सब विश्राम कर रहे थे। लेकिन 'राम काज कीन्हें बिना मोहे कहां विश्राम' जैसे रामभक्त हनुमान के मनोभाव मुनि रूपचन्द्र के स्वभाव में समा गए थे। उनका मन, विश्राम में नहीं, चिंतन में रमा था।

'मुनि जी थोड़ा विश्राम कर लीजिए', मनोहर मुनि की आवाज से विचार-शृंखला टूटी। लेकिन तब तक सूर्य पश्चिम में ढलने की तैयारी में था। कुछ ही देर में सभी को सायं प्रतिक्रमण करना होगा। बालक मुनि उठे और हाथ-मुँह धोये। अब मुनि दिनचर्या में सिर्फ आहार बाकी बचा था– जो सूरज की रोशनी में ही ग्रहण करना होता है।

मुनि जी ने आहार के बाद दिन में आचार्यश्री द्वारा दिया पाठ कंठस्थ करना

शुरू कर दिया। देखते ही देखते सूरज पश्चिम में ढल गया। रात घिर आयी और निद्रा देवी ने अपनी गोद में छुपा लिया मुनि जी को।

सात दिन इसी प्रकार की दिनचर्या में बीत गए। प्रतीक्षा थी आठवें दिन की। नवदीक्षित साधु-साध्वियों के लिए छोटी दीक्षा से बड़ी दीक्षा के बीच के सात दिन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। छोटी दीक्षा हजारों लोगों के समक्ष समारोहपूर्वक होती है। और आठवें दिन बड़ी दीक्षा कुछ ही लोगों के बीच।

ये सात दिन कड़ी परीक्षा के होते हैं। इस बीच नवदीक्षित साधु-साध्वियां साधु-चर्या में अपने को परख लेते हैं और आचार्यश्री भी उनको परख लेते हैं कि मुनि-जीवन के कठिन तप की कसौटी पर अमुक नवदीक्षित साधु-साध्वी खरे उतर पाएंगे या नहीं।

मुनि रूपचन्द्र ने इन सात दिनों में अपने आपको परख लिया था। उन्हें अपने संकल्प पर कोई मलाल नहीं था। वे इस चर्या में शत-प्रतिशत ढल जाना चाहते थे। कहीं कोई कमी न रह जाए। उन्हें आतुरता से प्रतीक्षा की आठवें दिन की। यानी उन्नीस अक्टूबर की।

'कल होगी हमारी बड़ी दीक्षा'- मुनि जी ने मनोहर मुनि से कहा। दोनों के भीतर असीम आनंद का सागर हिलोरें ले रहा था। दोनों नोहरे में एक कोना तलाश बतिया रहे थे, लेकिन इस कोने से नोहरे का मुख्य द्वार साफ दिखाई दे रहा था। आने-जाने वालों को वे देख सकते थे। कोई आए, कोई जाए, इससे उन्हें क्या? दोनों आपसी चर्चा में खोए हुए थे। फिर भी कभी-कभार नजर इधर-उधर चली जाती। अचानक मनोहर मुनि की नजर द्वार से प्रवेश करते हुए शुभकरण जी पर पड़ी। उन्होंने मुनि जी से कहा, 'देखिए आपके भाईसाहब आ रहे हैं।' संसारपक्षीय भाई शुभकरण जी को देखकर मुनि जी ने चर्चा को विराम देने का मन बना लिया। शुभकरण उनको नहीं देख पाए और किसी से मुनि रूपचन्द्र के बारे में पूछने लगे। यह देख मुनि जी खुद ही कोने से निकलकर आ गए। मनोहर मुनि वापस अपने कक्ष में चले गए। कोने में अब उनका स्थान शुभकरण ने ले लिया था। मुनि जी से कुशल-मंगल पूछने के बाद भीतर उमड़-घुमड़ रही बात शुभकरण की जुबान पर आ गई। बोले, 'रूपा देख लिया तूने इन सात दिनों में, क्या है मुनि-जीवन। इससे मिलना-जाना कुछ है नहीं।'

'भाईसाहब,' मुनि जी ने बात बीच में ही रोक कर कहा।

'बात पूरी सुन ले। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। अगर तू चाहे तो मैं रास्ता निकाल सकता हूं।'

'पर भाईसाहब' मुनि जी ने फिर टोका।

शुभकरण मुनि जी की बात पर कान न देकर अपनी रौ में कहते जा रहे थे। 'अगर तू कहे और तेरा मन हो तो मैं तुझे इस

सबसे निकाल सकता हूं। देख, कल सुबह जब तू शौच के लिए बाहर जाएगा, तब मैं घोड़ा ले आऊँगा और तुझे बिठाकर ले जाऊँगा। तेरे ऊपर कोई बात नहीं आएगी। मैं आने ही नहीं दूँगा। समाज सोचेगा कि मैं तुझे जबरदस्ती उठा ले गया। तू हां करे तो मैं ऐसा करूं।'

शुभकरण किसी भी कीमत पर रूपा को मुनि-जीवन से वापस ले आना चाहते थे। रोज घोड़ा फिराने तो जाते ही थे नियम से। रूपा को वापस लाने की पक्की योजना बनाकर आए थे गधैया जी के नोहरे में। लेकिन योजना मुनि रूपचन्द की हामी के बिना सफल नहीं हो सकती थी।

मुनि जी ने भाई शुभकरण की सारी बात सुनने के बाद कहा, 'भाई साहब, ऐसे थोड़े ही होता है। संकल्प तो संकल्प ही होता है और मैंने आजीवन व्रत लिया है। मुझे तो यहां सब खूब अच्छा लग रहा है। आपको तो अहसास हो ही गया होगा कि मैं अपने संकल्पों में कितना दृढ़ हूं।'

शुभकरण ने आखिरी दाँव चला, 'यह एक दिन का नहीं, सात दिन, सात महीने या सात बरस नहीं, पूरे जीवन का प्रश्न है।'

'भाईसाहब, मैंने सब कुछ सोच-समझकर ही इस मुनि-जीवन को अपनाने का निर्णय लिया है। अब आप मेरे बारे में सोचना बंद कर दीजिए।' बाल मुनि रूपचंद्र किसी बुजुर्ग की तरह शुभकरण को समझा रहे थे।

'ठीक है जैसी तेरी इच्छा, तेरी नियति। होनी को कौन टाल सकता है।' शुभकरण के स्वर में पराजय का भाव था। एक संकल्प के आगे पराजय। थोड़ी देर बाद वे घर चले आए। मुनि जी पर शुभकरण से वार्तालाप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे कल सुबह होने वाली बड़ी दीक्षा की उत्कंठा से भरे हुए थे।

उन्नीस अक्टूबर, उन्नीस सौ बावन की सुबह। रोज की तरह गधैया जी के नोहरे में आचार्यश्री के प्रवचन सुनने वालों श्रावकों का ताँता लग गया। आज कुछ ज्यादा ही संख्या में श्रावक थे। बारह सौ के आसपास। आचार्यश्री सामने मंच पर विराजमान थे। उनके आसपास नीचे आसन पर आचार्यश्री के साथ काफिले में आए इक्तालीस साधु और उनहत्तर साध्वियां थीं। अपनी रोगी काया के साथ चौरानवे साल के मंत्री मुनि भी उपस्थित थे। मंच के सामने एक ओर था नवदीक्षित पन्द्रह साधु-साध्वियों का समूह।

सवा दस बजे के आसपास आचार्यश्री ने इन नवदीक्षितों को बड़ी दीक्षा देने का विधान शुरू किया। अन्य दीक्षा श्लोकों के साथ पंच महाव्रतों की विस्तृत व्याख्या करते हुए बड़ी दीक्षा दी। पंच महाव्रत यानी सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

मुनि रूपचन्द्र इन महाव्रतों के बारे में जानते थे। उन्होंने कुछ दिन पहले भगवान महावीर की जीवनी पढ़ी थी। दीक्षा के बाद

मुनि जी का ध्यान भगवान महावीर के जीवन के उस प्रसंग पर चला गया, जब उन्होंने पहली बार ये पंचमहाव्रत अपने शिष्यों को दिए थे। पुस्तक की एक-एक पंक्ति मुनि जी के मानस में प्रक्षेपित होने लगी-

उस समय पावापुरी (बिहार) में बड़ा यज्ञ चल रहा था। इसमें उत्तर भारत के ग्यारह महापंडित अपने शिष्यों के साथ शामिल हुए। उनमें प्रमुख थे महापंडित इन्द्रभूति गौतम। यज्ञ के दौरान ही एक दिन पता चला कि पास ही समवसरण-विशाल धर्मसभा में महावीर नाम के एक साधु का आगमन हुआ है। यज्ञ स्थल पर उपस्थित अनेक लोग भगवान महावीर के दर्शनार्थ जाने लगे। यह देख महापंडित इन्द्रभूति गौतम को आश्चर्य हुआ। मन में सोचा, उत्तर भारत में मेरी टक्कर का पंडित कौन हो सकता है? लोग जिस महावीर के पास जा रहे हैं, मैं भी तो उनको परखूं। जब मैं उनके पास जाऊंगा तो अपनी विद्वता से उनको प्रभावित कर ही लूंगा। फिर वह मेरा शिष्यत्व स्वीकार कर लेंगे। पूरा समाज मेरा भक्त हो जाएगा। इन्द्रभूति गौतम अकेले ही समसवरण पहुँचे जहां भगवान महावीर अपनी तेजस्विता के साथ विराजमान थे। इन्द्रभूति गौतम को सामने देख, भगवान महावीर बोले, 'आओ, इन्द्रभूति गौतम कैसे आना हुआ?' सामने बैठे साधु के मुख से अपना नाम सुनकर इन्द्रभूति आश्चर्यचकित हुए। फिर मन में सोचा, मैं इतना बड़ा पंडित हूं। मेरा नाम आज कौन नहीं जानता। इनको भी पता होना कोई आश्चर्य नहीं।

इन्द्रभूति गौतम कोई उत्तर देते, इससे पहले भगवान महावीर बोले- 'तुम वेदों के महान ज्ञाता हो। बड़े पंडित हो। इतना बड़ा यज्ञ कर रहे हो। आत्मा-परमात्मा की बातें करते हो। लेकिन स्वयं आत्मा की सत्ता के बारे में शंकास्पद हो। बताओ हो या नहीं?' इन्द्रभूति ने मन ही मन सोचा, इन्होंने तो मेरे मन का चोर पकड़ लिया। बोले- 'आप सत्य कहते हैं। मैं वैदिक धर्म-दर्शन का प्रचार करता हूं। लेकिन मेरे मन में पर्याप्त शंका है कि आत्मा है या नहीं?-'

इसके बाद भगवान महावीर और इंद्रभूमि गौतम के बीच आत्मज्ञान की लंबी चर्चा चली। महापंडित इन्द्रभूति गौतम ने समर्पण करते हुए भगवान महावीर का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। इधर इन्द्रभूति के छोटे भाई पंडित अग्निभूति सोच में पड़ गए। न जाने क्यों इन्द्रभूति अभी तक नहीं लौटे। उन्होंने सोचा, यह महावीर इन्द्रजालिया है, जिसके चक्कर में मेरा भाई पड़ गया है। मैं जाकर उनको छुड़ाता हूं। अग्निभूति भी समवसरण पहुँच गये और महावीर के दर्शनों और उनके साथ चर्चा के बाद समर्पण कर दिया। इस प्रकार यज्ञ में शामिल सभी ग्यारह पंडितों ने अपने शिष्यों के साथ महावीर का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। (क्रमशः)

नवकारमंत्र के प्रभाव से चोर की सद्गति

○ साध्वी मंजुश्री

एक हुंडरीक नामक ग्राम में लोहाखुरा नाम का चोर रहता था। उसने मथुरा नगरी में चोरी का आतंक फैला रखा था। एक दिन किसी सेठ के घर चोरी करते रंगे हाथों पकड़ा गया। राजा ने तुरंत उस चोर को शूली चढ़ाने का आदेश दिया और कहा- इस नालायक ने सबको बहुत कष्ट दिया है। इसको भी वैसा ही कष्ट मिलना चाहिए। बड़ी दुर्दशा के साथ उसको बध भूमि में लाया गया। कड़ी धूप के कारण चोर प्यास से तड़फ रहा था। राजा का अपराधी होने के कारण किसी ने भी पानी नहीं पिलाया।

उस वक्त जैन श्रावक जिनदत्त उधर से गुजर रहा था। चोर ने उससे भी पानी की याचना की। जिनदत्त ने कहा जब तक पानी लेकर जाऊं तब तक तुम महामंत्र का जाप करो, ऐसा कह उसे मंत्र कंठस्थ करवा दिया। जिनदत के जाने के पश्चात चोर को शूली पर लटका दिया गया। अति पीड़ा के कारण वह मंत्र भी भूल गया और बोलने लगा 'मैं कुछ ना आणू जाणू सेठ वचन परमाणू' ऐसा बोलते-2 उसके प्राण पखेरू उड़ गए। सेठ के वचन तथा मंत्र पर विश्वास होने से वह मरकर महाऋद्धि वाला देव बना।

जब श्रेष्ठी पानी लेकर वापस आया तब तक चोर मर चुका था, जिनदत्त ने उसकी सद्गति होने की शुभकामना की। लोगों ने चोर की सहायता करने वाले श्रेष्ठ की शिकायत राजा से की। राजा ने श्रेष्ठि को भी मृत्यु दण्ड सुनाया और निर्दयता पूर्वक सेठ को मारने ले जाने लगे। लेकिन सेठ मन ही मन मंत्र का स्मरण करता रहा। उस स्थिति की जानकारी उस चोर देवता ने ज्ञान द्वारा प्राप्त की। उपकारी का उपकार करने हेतु उसने एक विशाल पहाड़ अपने हाथ में उठाया और आकाश में खड़ा हो कर्णभेदि आवाज से सबको ललकारा। खबरदार हैं यदि मेरे उपकारी सेठ को किसी ने कष्ट दिया तो सबको मौत के घाट उतार दूंगा। घबरा कर राजा तथा प्रजा ने सेठ से क्षमा याचना की और बन्धन मुक्त कर दिया, और पूछा कि यह क्या माया है। तब श्रावक जिनदत्त ने नमस्कार मंत्र की महिमा बताई और कहा कि इस मंत्र के प्रभाव से ही वह चोर मरकर देवता बना है। यह सुन सबके मन में मंत्र के प्रति श्रद्धा जमी। आकाश में दृश्यमान देवता सेठ का आभार मान कर अन्तर्धान हो गया।

आत्म-जागृति से ही संभव है मुक्ति का मार्ग

मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति के बाद ही पता चलता है कि हमारी वास्तविक संपदा क्या है? इसलिए वेदों में जो प्रार्थनाएं की गयी हैं, उनमें परमपिता परमेश्वर से ज्ञान ज्योति प्रदान करने के लिए निवेदन किया गया है। ज्ञान ज्योति का तात्पर्य है सत्पथ की यात्रा। यह यात्रा तभी सफल होती है, जब व्यक्ति अंधकार से प्रकाश, असत्य से सत्य, अज्ञान से ज्ञान की तरफ अग्रसर हो। मनुष्य मोह-निद्रा का त्याग करे। जीव, जगत और ब्रह्म के भेद को समझे, इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को संदेश देते हुए कहते हैं कि जिसे मैं स्वयं का ज्ञान कराना चाहता हूं, उसे प्रज्ञा बुद्धि प्रदान करता हूं। यह प्रज्ञा चक्षु भी वस्तुतः उसे ही मिल पाती है, जिस पर परमात्मा की अनंत कृपा होती है, क्योंकि व्यक्ति एक शक्ति तो हो सकता है, लेकिन महाशक्ति नहीं। आज हमारे पास कान तो हैं लेकिन हम ठीक से सुनते नहीं। आंखें तो हैं लेकिन अच्छा देखते नहीं। अपने मुख से मीठी वाणी निकले न जाने कितने दिन बीत जाते हैं? बस यही मनुष्य की सुषुप्तावस्था है। इसे जागृत करने को आवश्यकता है। व्यक्ति यह समझने का प्रयास करे कि उसके जीवन की सच्ची सार्थकता क्या है? क्या सिर्फ जन्म लेना और बिना किसी अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के चलते जाना ही जीवन है? यह बात भी सही है कि हम पतंग हैं और डोर किसी ओर के हाथ में है, लेकिन इस भौतिक लोक में परमात्मा ने मनुष्य को कर्म की स्वतंत्रता से रखी है, जिसे ध्यान में रखकर यदि हम कुछ अच्छा करते हैं, जिससे समाज और राष्ट्र का कुछ कल्याण हो, तो निःसंदेह प्रभु की कृपा बरसती है। बस कुछ छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर हम अपने अच्छे कर्मों के सहारे जीवन नैया को उस पार लगा सकते हैं। इसलिए हर रोज अपने

कर्मों का लेखा-जोखा आत्म दर्पण में देखकर करें। स्वयं को जगाएं, क्योंकि आत्म जागरण में ही परमार्थ की खोज शुरू होती है। हम भ्रम के दीप को बुझाकर ब्रह्म के परमदीप को प्रज्जवलित कर सकते हैं। ईर्ष्या, द्वेष से मुक्त हों, हम स्वयं का प्रवेश पवित्रता के प्रांगण में करवा सकते हैं अहंकार के कारागर से निकलकर ओंकार के विराट आकाश में हम विचर सकते हैं। यही जागृति है, जीवन की सच्ची सार्थकता है। मैं, मेरा और पराए का भेद मनुष्य के विकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार ये सब छूटने लगें और जीवन में तप-त्याग, प्रेम, करुणा, भक्ति आने लगे तो समझें कि जागृति आने लगी है, इसलिए प्रभु से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! हमें ऐसा जगा दो कि हम कभी मोह और अज्ञान के अंधकार में नहीं जा सकें। तब आप पाएंगे कि प्रभु आपकी पुकार सुनकर आपका मार्ग निर्देशन करेंगे, लेकिन पुकार सच्ची हो, हृदय से हो। जागृति जरूर आएगी। मुक्ति का मार्ग भी यहीं से बनना प्रारंभ होगा।

बाल-कविता

देश मेरे

तेरे माटी में खेले हम तेरे देह का खाया अन्न,
नदियों का मधुर जल पीकर शीतल हुआ तन-मन।
देश-प्रेम में रंगे हम सदा गाते तेरी महिमा,
अंत नहीं तेरे सौन्दर्य का शब्दों में न बंधे गरिमा।
देव-मनुज चिरकाल से गाते फिरते गौरव गान,
जीवन उत्सर्ग कर देश भक्तों ने तेरा अक्षुण्ण रखा सम्मान।
तुझ से बिछड़कर हृदय विकल हो छटपटाता है,
रह-रह कर विदेश में भी तू बहुत याद आता है।
वह मनुज नहीं दानव है जो निज देश का अपमान करे,
मातृभूमि का तो पशु भी सदैव सम्मान करे।

-रोहन जैन

पगली माई

आगरे में एक प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार रहता था। परिवार में एक बड़ी सुन्दर कन्या थी, जिसका नाम था जमीरन। उसके पिता इकबाल अहमद आगरे के प्रसिद्ध डॉक्टर थे। प्रचलित प्रथा के अनुसार आठ-नौ वर्ष की अवस्था में ही जमीरन का विवाह बैरिस्टर याकूब साहब के सुपुत्र से हो गया। भगवान् की इच्छा जमीरन ससुराल जा पायी ही नहीं, उसके पति पढ़ने के लिए आगरे से लखनऊ गये और इन्फ्लुएन्जा के शिकार हो गये। ठीक चौदह वर्ष की अवस्था में जमीरन विधवा हो गयी।

मुसलमानों में विधवा होने का क्या चिन्ता? पिता और भाई पुनर्विवाह कर देना चाहते थे। पता नहीं जमीरन को क्या धुन सवार हुई, उसने विवाह करने से स्पष्ट अस्वीकार कर दिया।

पिता ने बहुत समझाया 'हम हिन्दू थोड़े ही हैं, हमारे कुरानशरीफ में तो यह जायज है। लोग पता नहीं क्या कहेंगे। लड़का बहुत सुन्दर ओर पढ़ा-लिखा है।' पास-पड़ोसवालों ने भी आग्रह किया। भाई ने डराने-धमकाने में भी कोई कसर उठा न रखी। पर उस लड़की पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह अपनी बात पर अड़ी ही रही।

जब कोई बहुत कहता तो वह चुपचाप सिर नीचा करके रोने लगती। वैसे भी वह आजकल दिनभर किसी चिन्ता में रहती थी। नमाज पढ़ने में मन नहीं लगता था। बहुत आग्रह करने पर तो मस्जिद में जाती और वहां भी बैठी-बैठी आंसू बहाया करती। शरीर दिन-दिन सूखता जाता था। मुख पीला पड़ गया था।

डॉक्टर साहब के यह एक ही लड़की थी। वे इसे बहुत प्यार करते थे। लड़की की दशा से उन्हें बड़ी चिन्ती रहती थी। पर करते भी क्या? कोई उपाय चलता न था।

वैद्य आये, डॉक्टर आये, हकीम आये। सबने देखा और दवा दी। परंतु रोग के मूल तक कोई पहुंच न सका। किसी की दवा से कोई लाभ नहीं हुआ।

विवाह की चर्चा बन्द हो गयी। घर वालों ने देखा कि इस चर्चा से लड़की को बहुत कष्ट होता है, अतएव उन्होंने आग्रह छोड़ दिया। डॉक्टर साहब चाहते थे कि यदि वह शादी न करने में ही खुश है तो वैसा ही सही, पर वह प्रसन्न रहे।

पता नहीं जमीरन क्या सोचा करती थी। वह एकान्तप्रिय हो गयी थी। किसी के भी समीप बैठना उसे पसन्द न था। कोई कहता तो स्नान कर लेती और कोई कहता तो भोजन। स्वयं उसे अपने शरीर के रक्षण का भी ध्यान नहीं रहता था।

एकान्त में बैठकर सूने नेत्रों से कभी कमरे की छत को, कभी दीवारों को और कभी पृथ्वी को देखती रहती। उसके आंसू सूखना जानते ही न थे। उसे कुछ अभाव था- क्या? वह तो भगवान् ही जानें।

आगरे में प्रसिद्ध रामायणी महात्मा जनकसुताशरण जी की कथा की धूम थी। नित्य सहस्त्रों स्त्री-पुरुषों की भीड़ कथा में होती थी। कथा के अतिरिक्त समय में भी महात्मा जी की दर्शनार्थी भक्तों का समूह घेरे ही रहता था। नगर की गली-गली में महात्मा जी की कथा की चर्चा थी। आजकल सभी लोग कथा की ही बातचीत करते रहते थे।

बच्चों ने तो कथा की चौपाइयां तक स्मरण कर ली थीं और उन्हीं को वे दुहराया करते थे। जमीरन को भी कथा का समाचार मिल चुका था। मुसलमान होने पर भी उसमें साम्प्रादायिक संकीणता न थी।

जब सब लोग कथा की इतनी प्रशंसा करते हैं तो मैं भी एक दिन जाऊं। उसने किसी से भी बतलाया नहीं। बुरका डालकर अकेली ही घर से निकल पड़ी। पड़ोसी के घर जाकर, जो जाति से वैश्य था, उसकी स्त्री के साथ कथा में चली गयी और पीछे स्त्रियों के साथ बैठी रही।

कथा में किसे पता कि कौन आया और कौन गया। सब लोग कथा-सुधा के पान में तल्लीन थे। पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई थी।

प्रसंग था श्री रघुनाथ जी के वनवास के समय का केवट का वार्तालाप। महात्मा जी की वाणी ने प्रसंग में और भी आकर्षण भर दिया था। श्रोताओं में ऐसा एक भी व्यक्ति न था जिसके नेत्र सूखे हों। करुणरस की धारा चल रही थी।

महात्माजी ने प्रसंगवश भक्त रसखान और सदन कसाई की कथा भी सुनाई और केवट की भक्ति तथा श्री रघुनाथ जी की उदारता एवं दया का स्पष्ट चित्र श्रोताओं के सम्मुख रख दिया।

वक्ता स्वयं कथामय हो रहे थे। उनसे नेत्रों से दो अविरल धाराएं निकलकर मानस के पृष्ठों को स्नान करा रही थीं। वे बार-बार गला भर जाने से बीच में रुक जाते और नेत्र पोंछकर फिर बोलने लगते।

समय हो गया था और प्रसंग की गम्भीरता से वक्ता का कण्ठ अवरुद्ध हो गया था। कोई नहीं चाहता था कि कथा बन्द हो, पर वक्ता ने श्रोताओं के आग्रह पर भी शेष प्रसंग कल के लिये छोड़कर कथा का विश्राम किया। आरती हुई, प्रसाद वितरण हुआ। लोग अपने-अपने घरों को लौटने लगे।

वह वैश्य-स्त्री उठी और जमीरन से चलने को कहने लगी। जमीरन ने उसे रोका। तनिक अवसर मिला, वे दोनों महात्मा जी के चरणों में प्रणाम करके एक ओर खड़ी हो गयीं। महात्मा जी ने पूछा-'क्या पूछना है?'

'आप जिस पुस्तक से कथा कहते थे, उसे क्या मैं पढ़ सकती हूं?' जमीरन वैसे हिन्दी अच्छी प्रकार पढ़ लेती थी।

'क्यों इसमें क्या आपत्ति है?' महात्मा जी ने साश्चर्य कहा। दूसरी स्त्री ने बतलाया 'ये मुसलमान है।'

'राम-नाम' के जप और रामायण जी के पाठ में सबका अधिकार है। रघुनाथ जी केवल हिन्दुओं के ही थोड़े हैं, वे तो सबके

हैं। महात्मा जी ने एक छोटी-सी मानस की प्रति लाकर उसे दे दी। 'इसे नित्य पढ़ती रहो और राम-राम कहती रहो।'

जमीरन ने झुककर महात्मा जी के चरणों में मस्तक रखा। उसने मन-ही-मन महात्मा जी को अपना गुरु चुन लिया।

उसी दिनसे जितने दिन तक महात्मा जी आगरे में रहे, वह नित्य कथा में आती रही। कथा के आरम्भ में आती और कथा के समाप्त होने पर उठकर चली जाती।

घर के और मुहल्ले के मुसलमानों ने बड़ा हल्ला-गुल्ला मचाया कि जमीरन तो काफिर हो गयी। बात कुछ नहीं थी, वह नमाज पढ़ने अब नहीं जाती थी और हिन्दुओं की रामायण दिनभर पढ़ा करती थी। उसने मांसभक्षण भी छोड़ रखा था।

डॉक्टर साहब क्या करते? लड़की का मोह छोड़ा नहीं जाता था। डर था कि अधिक कड़ाई करने पर वह रो-रोकर बीमार न हो जाए और समाज के मुसलमान उनके पीछे पड़े हुए थे। अन्ततः उन्होंने लोगों से स्पष्ट कह दिया कि मैं लड़की की इच्छा में बाधा नहीं डालूंगा।

समाज तो ऐसे ही चलता है। लोगों ने कुछ दिन तो बहुत व्यंग्य कसे और फिर जैसे-जैसे बात पुरानी पड़ती गयी, उसे भूल गये। उनके लिये विशेष से वह साधारण बात हो गयी और सब तो शान्त हो गये, पर जमीरन की भाभी और भाई शान्त नहीं हुए। वे बराबर उसके पीछे पड़े थे। भाई का कहना था कि 'वह शादी कर ले और काफिरों की इस पुस्तक को फेंक दे।' भाभी उसके मांस न खाने से चिढ़ती थी और उसे व्यंग्य में 'भगतिन' कहकर पुकारती थी।

पिता की उदारता और प्रेम ने जमीरन को सुविधा दे रखी थी। पिता के भय से भाई अधिक उद्दण्डता नहीं कर पाता था। किसी प्रकार दिन कटते जाते थे।

जमीरन का मन इस परिवार से ऊबता ही गया। उसे ने तो परिवारवालों के साथ बोलना अच्छा लगता और न उनके साथ रहना। उसे यहां रहकर अपने जप और पाठ में कम अड़चन नहीं पड़ती थी।

उसके लिये मांस को पकते और दूसरों को भक्षण करते देखना भी असह्य हो गया। वह घर में मांस आने पर कोठरी बन्द करके बैठ रहती। वह दिन दूध और फलपर काट देती। महीने में बीस दिन ऐसे ही बीतते।

धीरे-धीरे उसका अयोध्या की ओर आकर्षण हुआ। कई बार उसने अयोध्या जाने का विचार भी किया, पर पिता के प्रेम को तोड़कर जाना भी उसके लिये शक्य न था।

आकर्षण बढ़ता गया और वह अयोध्या जाने के लिये व्याकुल रहने लगी। जिसे भगवान् स्वयं बुलाना चाहें, उसे रोक कौन सकता है! आगरे में हैजा फैला और उसने डॉक्टर साहब को ले लिया।

घर में सब लोग रो रहे थे, सब पछाड़ें खा रहे थे और जमीरन के नेत्रों में अश्रु भी न थे। उन्मत्त दृष्टि से वह आकाश की ओर एकटक देख रही थी।

डॉक्टर साहब के इष्ट-मित्र सभी आ

गये थे। फूलों से सजा हुआ शब कब्रगाह के लिये उठाया गया। जमीरन उठी और उस शब के साथ हो ली। लोगों ने बहुत लौटाने की चेष्टा की, पर वह लौटी नहीं।

शव को कब्र दे दी गयी। लोग ऊपर पुष्प चढ़ाकर लौटे। पता नहीं कब जमीरन वहां से चली गयी थी। सबने समझा कि घर लौट गयी होगी। पर वर घर नहीं आयी थी।

सन्ध्या को एक बार फिर एक मुसलमान ने कब्र के पास अकेली जमीरन को देखा और फिर किसी ने उसे आगरे में कभी नहीं देखा। भाई ने बहुत चेष्टा की, पर जमीरन का उन्हें पता न लगा। पांच सौ रुपये के पुरस्कार की घोषणा भी कोई फल नहीं दिखला सकी।

अयोध्या में एक वृद्धा मुसलमान-स्त्री पगली माई करके प्रसिद्ध हो गयी थी। वह कभी अयोध्या रहती और कभी लखनऊ आ जाती थी। लोगों की उस पर बड़ी श्रद्धा थी। लोग उसे घेरे ही रहते थे। किसी ने बताया कि पगली माई आगरे की रहने वाली है।

वह किसी से कुछ बोलती नहीं थी। प्रातः नगर के बाहर से आती और आकर किसी पेड़ के नीचे बैठ जाती। लोग आकर उसे घेर लेते, दर्शन करते, फल उसके सामने रख देते।

पगली माई कभी फलों को एक ओर फेंक देती और कभी उन्हें वहीं छोड़कर किसी दूसरे पेड़ के नीचे जा बैठती। किसी ने नहीं देखा कि वह भोजन क्या करती है।

जिस पर वह बहुत प्रसन्न होती, उसकी ओर देखकर केवल हंस देती, कोई सांसारिक वस्तुओं की कामना करता तो वह पृथ्वी पर थूक देती। कोई बहुत तंग करता तो उठकर वहां से चल देती।

पता नहीं लगा कि पगली माई रात्रि को कहां रहती है। संध्या होते ही वह नगर से बाहर की ओर चल देती। कई बार लोगों ने पीछा किया, पर उन्हें जब कई मील चलना पड़ा तो हारकर लौट आये। अनुमान यह था कि वह कही सरयू-किनारे रहती होगी।

माई दिनभर अस्पष्ट ध्वनि में सर्वदा कुछ कहा करती थी। उसके पास एक रामायण का गुटका भी रहा करता था। पर उसे पाठ करते या पुस्तक खोलते किसी ने देखा नहीं।

दिन में केवल एक बार वह कनकभवन जाती और भवन के सबसे बाहरी द्वार पर मस्तक टेककर चुपचात लौट जाती। यही उसका नित्य क्रम था।

ठीक रामनवमी के उत्सव की भीड़ में जब पगली माई ने मंदिर की देहली पर मस्तक रखा तो वह फिर नहीं उठ सकी। बहुत देर बाद लोगों का ध्यान उधर गया। 'जय सीताराम सीताराम सीताराम' की ध्वनि के मध्य में बड़ी श्रद्धा से पगली माई की सजी हुई अरथी वैष्णवों ने कन्धे पर रखी। अब भी वह रामायण जी का गुटका साथ था। भक्तों ने उस साकेत की पगली के शरीर को सरयूजी की परमपावन गोद में समर्पित कर दिया।

प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

सेहत के लिए बेहद गुणकारी है केसर

केसर बहुत महंगा द्रव्य है जो प्राचीन काल से ही अपने रंग, स्वाद और औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। मूलरूप से यह दक्षिणी यूरोप का मसाला है लेकिन अब दुनिया के अधिकांश देशों स्पेन, इटली, फ्रांस, यूनान, तुर्की और ईरान तथा भारत के जम्मू-कश्मीर राज्य में इसकी खेती होती है। दुनिया में सर्वोत्तम किस्म का केसर भारत के जम्मू एवं कशमीर में पैदा होता है। एम.एल. किंगफूड के वाईस प्रसिडेंट विभोर अग्रवाल का कहना है कि केसर का स्वाद अलग तरह का होता है क्योंकि इसमें पाइक्रोसीन और सैफ्रानाल नामक रासायनिक तत्व होते हैं, साथ ही इसमें एक प्राकृतिक कैरोटिनायड रासायनिक तत्व क्रोसीन देता है जो इसे स्वर्णिम आभा देता है।

इसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं जो व्यक्ति की तंदुरुस्ती को बढ़ाने के लिए मददगार हैं।

<u>केसर के औषधीय गुण</u>

• यह गठिया से आराम दिलाता है। साथ ही यह जोड़ों के दर्द में भी गुणकारी है। केसर खिलाड़ियों के लिए भी मददगार है क्योंकि यह थकान को मिटाता है और मांसपेशियों में जलन से आराम देता है। ज्यादा अभ्यास करने से ऊतकों में लैक्टिक एसिड बनता है लेकिन केसर ऊतकों को इससे मुक्ति दिलाता है।

• केसर पाचन और भूख बढ़ाने में मदद करता है क्योंकि यह पाचन अंगों के सर्कुलेशन में सुधार करता है। यह अमाशय आंत की झिल्लियों पर परत बनाता है। जिससे पेट दर्द और एसिडिटी को दूर भगाने में मदद मिलती है।

• यह मसाला गुर्दे, मूत्राशय और जिगर की बीमारियों में बेहद गुणकारी है। केसर खून साफ करता है।

• केसर गैस और एसिडिटी से संबंधित समस्याओं से राहत देने में बेहद कारगर है।

• केसर को हल्का उपमाशक भी कहा जाता है जो अनिद्रा में गुणकारी है और यह डिप्रशन को भी ठीक करता है। सोने से पहले दूध के साथ चुटकी भर केसर लेने से अनिद्रा जैसी बीमारी को दूर करने में मदद मिलती है।

• केसर में क्रोसीन नामक तत्व होता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह बुखार को भगाने में मदद करता है। केसर में मौजूद क्रोसीन दिमाग तेज करने और याददाश्त बढ़ाने में मददगार है।

• केसर आंखों और दृष्टि के लिए भी गुणकारी है। हालिया अध्ययनों में इस बात का खुलासा हुआ है केसर का इस्तेमाल करने वाले लोगों की दृष्टि में सुधार आया है। केसर मोतियाबिंद के मामलों में आंखों

की ज्याति बढ़ाने में भी बेहद कारगर है।

• अगर सर्दी लग गई हो तो रात्रि में एक गिलास दूध में एक चुटकी केसर और एक चम्मच शहद डालकर यदि मरीज को पिलाया जाये तो उस अच्छी नींद आती है।

• त्वचा रोग होने पर खरोंच और जख्मों पर केसर लगाने से जख्म जल्दी भरते हैं।

• बाल्यकाल में शिशुओं को अगर सर्दी जकड़ के और नाक बंद हो जाये तो मां के दूध में सेसर मिलाकर उसके माथे और नाक पर मला जाये तो सर्दी का प्रकोप कम होता है और उसे आराम मिलता है।

• गंजे लोगों के लिए तो यह संजीवनी बूटी की तरह कारगर है। जिनके बाल बीच से झड़ जाते हैं, उन्हें थोड़ी से मुलट्ठी को दूध में पीस लेना चाहिए। तत्पश्चात् उसमें चुटकी भर केसर डाल कर उसका पेस्ट बनाकर सोते समय सिर में लगाने से गंजेपन की समस्या दूर होती है।

• रूसी की समस्या हो या फिर बाल झड़ रहे हों, ऐसी स्थिति में भी उपरोक्त फार्मूला अपनाना चाहिए।

• पुरूषों में शक्ति बढ़ाने हेतु शहद, बादाम और केसर लेने से फायदा होता है।

• ल्यूकोरिया एवं हिस्टीरिया की स्थिति में ग्रहण करने से पीड़ित महिला को फायदा पहुंचता है। सावधानी- चूंकि यह उष्णतावर्धक है, अतः कम से कम सेवन करना चाहिए।

प्रस्तुति : योगी अरूण तिवारी

वार्षिकोत्सव-गीत

मनाओ मनाओ मनाओ खुशियां
वार्षिक उत्सव आज सभी मनाओ खुशियां
बजाओ बजाओ बजाओ शंखिया
ऐसे गुरू पर नाज सभी बजाओ शंखिया
मनाओ मनाओ मनाओ खुशियां

1. युग युग जीओ इस धरती पर मंगल कामना
मिले सदा आशीर्वर यह जन-जन की भावना
चरणों में सब शीष झुकाओ गाओ रसिया।

2. कितनों का उपकार किया है करुणा के अवतार
बुद्ध और महावीर मानो हो गए साकार
कोयल कूजे उपवन में सजाओ बकिया

3. गुरुवर के शिर पर स्वाभाविक धरा हुआ है ताज
क्या हम भेंट चढ़ाएं है यह दुनिया की रिवाज
नभ धरती को गीतों से गूंजाओ सखियां

4. मानव मंदिर मिशन सभी का लो इसका आधार
इसकी शरण मिली है जिसको उसका बेड़ा पार
नव्य भव्य यह मिशन इसे परखे सब दुनियां

तर्ज- बता दे बता दे

मासिक राशि भविष्यफल-जनवरी 2018

o डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो आय सामान्य रहेगी। तथा व्यय अधिक रहेगा। व्ययाधिक्य के कारण मानसिक चिंता रहेगी। सत्संग, उपासना आदि लाभप्रद रहेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह सामान्य रहेगा। पत्नी तथा संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा नहीं हे। विरोधी पक्ष कार्यों में रूकावट डालेगा। जिन्हें आप अपना समझते है वे ही अंदर आपका विरोध कर सकते हैं। उत्तरार्ध में स्थिति में सुधार आयेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि होगी नई योजना बनेंगी। विरोधियों पर काबू पाने में आप सक्षम होंगे।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा है। कार्यों में सफलता मिलेगी, किन्तु उत्तरार्ध में व्यर्थ के वाद विवाद होंगे तथा आय पर भी विपरीत असर पड़ेगा। हां अचानक कोई लाभ की स्थिति आ सकती है। किसी पुराने केस के निपटारे से खुशी मिलेगी।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा रहेगा। सामान्यतः लाभ देने वाला है। मित्र बंधु मददगार रहेंगे। कोई पिछला रूका हुआ पैसा भी इस माह मिल सकता है जिससे मानसिक चिंता दूर होगी। हां प्रेम संबंधों में दरार आ सकती है। इसी कारण कोई झगडा आदि भी बन सकता है।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य फलदायक है। घर के झंझटों से ही फुर्सत नहीं मिलेगी। किसी का आप भला करना चाहेंगे तो भी बुराई ही मिलेगी। बिन मतलब के किसी के मामले में दखल न दें। जब आपको कुछ न सूझे तो बुजुर्गो की सलाह अवश्य लें। किसी नई योजना का क्रियान्वयन भी हो सकता है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में लाभ देने वाला है तथा उत्तरार्ध में सामान्य फल देने वाला है। परिश्रम`साध्य फल देने वाला है। कोई शुभ कार्य आपके हाथों से हो सकता हैं। तर्क-वितर्क से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कुछ जातकों की विदेश यात्रा भी हो सकती है किंतु यात्रा सफल होने में शंका है।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में पैसा न लगाएं। नुकसान हो सकता है। विरोधी तत्वों के सक्रिय रहने से मानसिक परेशानी रहेगी। हां सरकारी कर्मचारी अचानक लाभ की आशा कर सकते है। परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान हो सकता है।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक आर्थिक लाभ की उम्मीद नहीं की जा सकती । इस संबंध में की जाने वाली यात्राएं भी शुभफल नहीं दे पायेंगी। आपसी मन मुटाव तथा कोर्ट-कचहरी की नौबत न आने दें। अपने बुजुर्गों को सम्मान दें तथा उनकी सलाह से काम करें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह मास परिश्रम साध्य लाभ लिये होगा। अपनी शक्ति से अधिक न तो कार्य करें और न ही अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में धन लगाए। यही श्रेयस्कर रहेगा। आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें। मौका पाकर अपने ही धोखा दे सकते हैं। किन्हीं सरकारी कर्मचारियों का पदोन्नति का योग बनेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अन्य लाभ वाला होगा। वर्तमान में जीएं। बीती बातों को स्मरण करके परेशान होने के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। नये आगन्तुकों से मेल मिलाप में सावधानी बरतें। परिश्रम से जी न चुरायें तो अच्छा फल मिलेगा। कोई नई योजना बनेगी जिसका क्रियान्वयन आगे होगा।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह आय से अधिक खर्च वाला रहेगा। व्यस्तता अधिक रहेगी। योजना तो कई बनेंगी किंतु उनको कार्यरूप में परिणित नहीं किया जा सकेगा। किसी अज्ञात भय के कारण मानसिक परेशानी बनेगी। शत्रु सिर उठायेंगे, किंतु वे अपना ही नुक्सान कर बैठेंगे।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक मेहनत करने के पश्चात भी अन्य लाभ वाला होगा। वातावरण ऐसा बनेगा कि मानसिक चिंता बनी रहेगी। कार्य पूरा होने की आशा बनेगी पर कार्य पूर्ण नहीं होगा। व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की स्थिति भी आ सकती है। कोई लंबी यात्रा का योग भी बन सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में अपकीर्ति का भय है।

-इति शुभम्

त्यागमूलक जीवन-प्रणाली ही है सुख-शांति का रास्ता

मानव मंदिर मिशन के 36वें वार्षिकोत्सव पर पूज्य आचार्यश्री का उद्‌बोधन

दिनांक 17 दिसम्बर, रविवार, 2017 को जैन आश्रम, मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली में मानव मंदिर मिशन के 36वें वार्षिक समारोह में उपस्थित विशाल जन-समुदाय को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- छोटे-से छोटे और बड़े-से-बड़े प्राणी की सारी क्रियाएं सुख-शांतिमय जीवन के लिए होती हैं। भगवान महावीर के शब्दों में- सुह साया दुक्ख-पडिकूला- सुख-स्वादाः दुःख-प्रतिकूला- यानि समस्त प्राणी सुख चाहते हैं दुःख कोई भी नहीं। प्रश्न होता है वह सुख-शांति मिले तो कैसे मिले। सीधा-सा उत्तर मिलता है इच्छाओं/कामनाओं की पूर्ति सुख शांति का मार्ग है। किन्तु प्रश्न का समाधान यहां नहीं हो पाता है। क्योंकि इच्छाओं का कहीं अंत ही नहीं है। एक इच्छा पूरी होते-होते दूसरी इच्छा जाग जाती है। इच्छाओं पर इच्छाएं, अशांति वैसी की वैसी। इतना ही नहीं, इच्छाओं की पूर्ति से मिलने वाला वस्तु-सुख, उस वस्तु के बार-बार मिलने से वह सुख ही दुःख का कारण बन जाता है। जिस मिठाई से जीभ को सुख मिलता है, वही मिठाई अधिक मात्रा से खा लेने से बीमारी का, दुःख का कारण बन जाती है। इसका अर्थ हुआ, वह असली सुख नहीं, सुख का भ्रम था। असली सुख होता तो उतना गुना सुख वढ जाना नहीं था। ऐसा नहीं होने का अर्थ वह सुख है ही नहीं।

आपने कहा- इसी सुख-शांति को खोजते-खोजते पूर्व की ऋषि-मनीषा ने पाया- असली सुख-शांति वस्तु-भोग में नहीं वस्तु त्याग में है। उदाहरण के रूप में समझें- कोई फरिश्ता आपके पास आया और बोला- मैं प्रभु-दरवार से आया हूं। परमात्मा ने मुझे दो पुडिया दी है। एक है सुख की पुडिया, दूसरी है दुःख की पुडिया। इनमें एक पुडिया मुझे आपको देना है, दूसरी पुडिया पूरे शहर को बांटना है। आपको जो पुडिया पसंद है, आप लेलें। आप बतायें कौन-सी पुडिया आप लेना चाहेंगे। यह प्रश्न मैंने सैंकड़ों बार पूछा है। उत्तर लगभग सुख की पुडिया के लिए मिलता है। और मैं समझता हूं यहीं पर आप चूक जाते हैं। अनजाने ही दुःख को आमंत्रण दे देते हैं।

आप सोचें सारा नगर दुःखी है, वहां एक परिवार क्या सुखमय जीवन जी सकता है? हजार आंखों में आंसू हों, वहां एक

चेहरे पर क्या मुस्कान आ सकती है? इससे उल्टा सोचें- पूरे शहर की खुशियों के लिए आप सुख की पुडिया का त्याग कर देते हैं। उस स्थिति में हजारों परिवारों की मुस्कानों के बीच क्या एक परिवार की आंखों में आंसू रह सकते हैं? यह तभी संभव है जब हम सुख की पुडिया का त्याग करें। अपने मन को कड़ा करके त्याग की हिम्मत दिखायें और पाएंगे सर्वत्र खुशियां-ही-खुशियां हैं।

इसी सचाई की गहराई में जाते हुए भगवान महावीर ने त्यागमूलक जीवन-प्राणाली का विधान दिया। इसी सुख-शांतिमूलक अवधारणा के लिए उपनिषद् के ऋषियों ने कहा- तेन त्यक्तेन भुंजीथाः- त्यागपूर्वक भोग। पूरब ने कहा- त्यागपूर्वक भोग। पश्चिम के पास आत्म-दृष्टि नहीं थी। इसलिए वहां कहा गया- भोगपूर्वक त्याग। त्यागमूलक जीवन-प्रणाली में आपके पास भौतिक दृष्टि से कुछ न होते हुए भी आप सम्राट का जीवन जियेंगे। भोगमूलक जीवन-प्रणाली में आपके पास भौतिक समृद्धि के बावजूद भिखारी का जीवन जियेंगें। अतः आपसे यही कहना चाहूंगा विज्ञान द्वारा प्रदत्त भौतिक समृद्धि की अंधी दौड में अपनी त्याग-प्रधान जीवन-प्रणाली को भूल न जाएं। अपने एक परिवार के होठों पर मुस्कान के लिए समाज की हजारों आंखों के आंसुओं को न भूल जाएं। अनुकंपा, करूणा, सेवा, दान ये सब इसी त्यागमूलक जीवन-प्रणाली के अंग हैं, जिसके लिए पिछले छत्तीस वर्षों से यह मानव मंदिर मिशन कार्य-रत है। इस सेवा-यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति डालकर अपने जीवन को धन्य बनायें।

वार्षिकोत्सव का आरंभ पूज्य गुरूदेव के मंगल मंत्रों से हुआ। गुरूकुल की बालिकाओं के दीप-मंत्रों के बीच समागत अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन किया गया। उसके पश्चात् गण-वेश में बलिकाओं द्वारा गणपति-वंदना, गुरू-वंदना तथा साध्वी कनकलताजी के निर्देशन में मानव मंदिर महिला विभाग द्वारा उत्सव-गीत आदि ने सबके दिलों को छू लिया। महासचिव श्री आर.के. जैन तथा ट्रष्टी श्री सुभाष तिवारी ने समागत अतिथियों का अंग-वस्त्रम् से स्वागत किया। पूर्व रेलमंत्री श्री पवनजी बंसल ने कहा- मेरा सौभाग्य है पूज्य महाराजश्री के मानव-निर्माण के इस मिशन से मैं एक परिवार के सदस्य के रूप में जुड़ा हुआ हूं। समाज-सेवी श्री ललितजी ने बालक-बालिकाओं में ऊंची शिक्षा और ऊंचे संस्कारों के निर्माण-कार्य की हृदय से अनुमोदना की।

इस प्रसंग पर लंदन, यू.के. से समागत दानवीर श्रीमान् के.सी. जैन ने मानव मंदिर गुरूकुल के ऊपरी तल का लोकार्पण करते

हुए कहा- आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज साहिब के मार्ग-दर्शन में चल रहे इस पुनीत कार्य से जुड़कर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मुम्बई महानगर, राजस्थान तथा गुजरात के मंदिर तथा समाज-सेवा कार्यों से जुड़ने का सौभाग्य मुझे मिलता रहा है। दिल्ली मानव मंदिर के सेवा-कार्यों की जानकारी मुझे यहां उपस्थित समाज-सेवी श्री सोहनराज जी खजांची से वर्षों पूर्व मिली। तब से तन-मन-धन से इस मिशन से जुड़ जाना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। अल्पसंख्यक आयोग, दिल्ली सरकार के अध्यक्ष डॉ. जफरूल इस्लाम खान ने मानव मंदिर मिशन के जन-कल्याणकारी सेवा-कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपनी ओर से दस हजार रूपयों के अनुदान की घोषणा की। नगर-पार्षद् श्रीमती यास्मिन् किदवई तथा श्रीमती दर्शना जाटव ने मिशन को सर्वात्मना सेवायें देने का संकल्प व्यक्त किया।

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री जी ने अपने आशीर्वचन में कहा-

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर,
दान दिये धन ना घटे, कह गए दास कबीर।
पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम

आपने सेवा, शिक्षा के इस मिशन को ऊंचाइयों तक ले जाने की प्रेरणा दी। समाज-सेवी श्रीमती मंजु जैन तथा सदाबहार श्रीमती प्रियंवदाजी ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। साध्वी समताश्रीजी ने गुरूकुल की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए झुग्गी-झोपडियों के बच्चों के बीच शिक्षा-अभियान की जानकारी दी, जिसका उपस्थित जन-समुदाय ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। अपनी चालीस दिवसीय अमेरिका-यात्रा के अनुभव साझा करते हुए शिष्य अरूण योगी ने बताया- इस यात्रा में ह्युष्टन, ऑस्टिन तथा मिड-लैण्ड में दो-दो दिवसीय योग-शिविर रहें। सर्वत्र पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों की गूंज सुनाई देती है ही, इस बार योग-शिविर में ध्यान और कुंडलिनी जागरण के प्रयोग विशेष प्रभावशाली रहे। पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद से मानव मंदिर मिशन के शिक्षा, आयुर्वेद तथा योग-विद्या प्रकल्पों की जड़ें गहराई तक पहुंच गई हैं।

<u>साध्वीश्री चांदकुमारी जी के प्रति मौन श्रद्धांजलि</u>

इस अवसर पर पिछले दिनों दिवंगत मातृ-तुल्या साध्वीश्री चांदकुमारी जी की विशेष सेवाओं और सद्गुणों का स्मरण करते हुए उपस्थित जन-समुदाय ने मंगल मंत्रों के साथ उन्हें विनम्र मौन श्रद्धांजलि समर्पित की।

<u>गुरूकुल के बच्चों द्वारा अद्भुत योग-प्रस्तुति</u>

हर वार्षिक समारोह का प्रमुख आकर्षण

होता है मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों द्वारा दी जानेवाली रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति तथा अविश्वसनीय योग-प्रदर्शन। इस वर्ष तो बच्चों ने जैसे अपनी प्रस्तुतियों से आकाशी ऊंचाइयां छू लीं। उस नयनाभिराम प्रस्तुति का वर्णन शब्दों से परे हैं। गुरूकुल के बच्चों के साथ झुग्गी-वासी छोटे-छोटे बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम ने भी जन-समुदाय का मन मोह लिया। इसी कड़ी में वन्दे मातरम् राष्ट्र-गीत पर दी जाने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुति के लिए जन-मानस की प्रतिक्रिया थी कि यह प्रस्तुति 26 जनवरी पर दी जानेवाली सांस्कृतिक झलकियों से कम नहीं है।

इसी प्रसंग पर रोहतक-निवासी श्रद्धा-समर्पित श्री दिनेश जी किरण बाई गुप्ता परिवार के नन्हे बालक-बलिकाओं द्वारा प्रदर्शित एवं कुमारी ऋतु द्वारा निर्देशित सप्त-व्यसन-परिहार नाटिका भी लोगों ने सूब पसंद की।

‘सर्वे सन्तु निरामयाः’ पुस्तक का विमोचन

गुरूकुल के बालकों द्वारा विरचित योग-परक पुस्तक- ‘सर्वे संतु निरामयाः’ सभी स्वस्थ हों- का विमोचन ब्रिगेडिर सोम सुमन बनर्जी द्वारा किया गया। यह परिवार भी गुरूकुल के साथ पूरे सेवा भाव से वर्षों से जुड़ा है। इस पुस्तक में योगासन-विधि तथा उसके लाभ-परिणामों का दिग् दर्शन है। गुरूकुल के ही मीडिया कम्युनिकेशन का छात्र मनीष जैन ने अपने सहयोगी छात्रों के साथ इस पुस्तक की संयोजना की है।

यशस्वी कवि श्री युगराज जैन का कवितामय संयोजन

पूरे समारोह को चार चांद लगाने वाला था मुम्बई से समागत यशस्वी कवि श्री युगराज जैन का कवितामय संयोजन। श्री जैन मुम्बई, महाराष्ट्र के जाने-माने कवि तो हैं ही, विशाल कवि-सम्मेलनों के सफल मंच संचालक होने के साथ-साथ युवा-पीढी के संस्कार-निर्माण शिविरों के लिए भी सुविख्यात हैं। जैसा प्रसंग वैसी आशु-कविता श्रोताओं को बांधे रखती है।

समारोह के अंत में श्री अरूण योगी द्वारा दान-दाताओं के उदार सहयोग की घोषणाओं का जन-समुदाय ने हर्षोल्लास से स्वागत किया। कार्यक्रम के पश्चात् कदीमी श्री राजेन्द्र कुमार जैनी देवी जैन भोगल के मधुर प्रसाद का आनंद लोगों ने जी भर कर लिया। वार्षिक समारोह में दिल्ली महानगर, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब के श्रद्धालु जन भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

पूज्य गुरूदेव की विशेष वार्ता का दिल्ली दूरदर्शन पर विशेष प्रसारण

18 दिसम्बर 2017 प्रातः 7:30 से 8:30 बजे ‘आज सवेरे’ शीर्षक के अन्तर्गत दिल्ली दूरदर्शन ने पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी की अध्यात्म एवं साहित्य विषय पर एक विशेष वार्ता का प्रसारण किया।

लगभग एक घंटे की इस वार्ता में पूज्यवर ने अध्यात्म, विज्ञान, साहित्य, धर्म-जगत में पनपने वाले अंध-विश्वासों पर सटीक प्रकाश डाला। इस वार्ता पर देश भर से मिलने वाली व्यापक प्रतिक्रिया से पता चलता है लोगों ने इसे खूब पसंद किया। ऐसे प्रसारण दूर-दर्शन पर बार-बार आने का भी लोगों का आग्रह था जिससे धर्म, चेतना के प्रति सही समझ समाज में जागृत हो सके। इस प्रसारण में यशस्वी कवि-कथाकार प्रो. फूलचन्द मानव तथा सुविख्यात नाटककार सेवा-निवृत्त दूर-दर्शन निदेशक श्री गौरीशंकर रैना की प्रशंसनीय सेवायें रहीं।

श्रद्धांजलि

मातृ-तुल्या साध्वी चांदकुमारीजी द्वारा समाधि-मरण का वरण

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी की वरिष्ठतम शिष्या तथा पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी की अनन्य सहयोगी मातृ-तुल्या साध्वी चांदकुमारी जी ने 6-7 दिसम्बर 2017 की मध्य रात्रि में समाधि-मरण का वरण कर लिया। वे 93 वर्ष की थी। आपने तेरापंथ संप्रदाय के आठवें आचार्यश्री कालू-गणि के कर-कमलों से 11 वर्ष की उम्र में जैन-साध्वी की दीक्षा स्वीकार की। साध्वी मंजुश्रीजी, साध्वी दीपांजी एवं साध्वी चांदकुमारीजी- भगिनि त्रिपुटी का उम्र भर का लम्बा सहवास था। आप तीनों पूज्यवर के मानव मंदिर केन्द्र हरियाणा, पंजाब का कार्य विशेष रूप से देखती थी। इसलिए आप तीनों गुरूकुल के बच्चों में पंजाब मांजी के नाम से लोकप्रिय थी। साध्वी मंजुश्रीजी तथा साध्वी दीपांजी का पिछले वर्षों स्वर्गवास हो गया था। साध्वी दीपांजी जैन साध्वी-समाज में प्रथम साध्वी थी जिन्होंने अपना संपूर्ण देह-दान चिकित्सा-जगत को कर दिया था। साध्वी चांदकुमारीजी बहुत ही हिम्मत-हौसले वाली साध्वी थी। अपने प्यार और डॉट की डोरी में समाज को बांधे रखती थी। हरियाणा-पंजाब समाज उनके प्यार और डॉट को अपना सौभाग्य मानता था। पूज्य गुरूदेव और पूज्या महासती मंजुलाश्री जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा-समर्पित थी। बार-बार कहती- आपके स्नेह-सान्निध्य से मैं धन्य हूं। सहयोगी साध्वियों की सेवाओं से पूर्ण शांति और समाधि का जीवन जी रही

हूं। मानव मंदिर मिशन का संदेश घर-घर में पहुंच जाए, यही मनोकामना है। मानव मंदिर, सुनाम पूरे पंजाब का कार्य-क्षेत्र बन जाए, उनका यही सपना था। सुनाम समाज भी आपके इंगित का पूरा सम्मान करता था। उम्र भर लगभग स्वस्थ रही। पिछले पांच-सात दिनों में शरीर जरूर सुस्त हो गया था। लगता था अब महाप्रयाण का समय आ गया है। इसलिए चौबीसों घटे साध्वियां, गुरूकुल की बालिकायें तथा सेवादार बहिन पूरे सेवा-सजग थे। मंगल-मंत्रों की धुन में ध्यानस्थ साध्वी चांदकुमारी जी ने रात्रि 12:35, 7 दिसम्बर को अंतिम सांस ली। संसार पक्षीय पूरा दसानी-परिवार आपके प्रति श्रद्धा-सम्मान से पूरा ख्याल रखता था। दिल्ली-निवासी श्री चांदरतन दसानी परिवार बराबर संपर्क जिम्मेवारी रखता। प्रयाण के दिन पूरे देश से दसानी-परिवार संयोग-वशात् अंतिम-संस्कार में उपस्थित होकर अपने को धन्य मान रहा था। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब-समाज के जय-नाद के बीच आपका पार्थिव शरीर अग्नि-संस्कार को समर्पित कर दिया गया। ऐसी मातृ-तुल्या साध्वीजी के प्रयाण से एक बड़ी कमी का अनुभव होना स्वाभाविक है। इस प्रसंग पर पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए दिवंगत आत्मा की ऊर्ध्व-गति तथा बंधन-मुक्ति की मंगल कामना की। दसानी परिवार तथा हरियाणा-पंजाब समाज को मिशन के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की उनकी मनोकामना पूर्ण करने की प्रेरणा दी। रूपरेखा पत्रिका परिवार तथा मानव मंदिर मिशन की दिवंगत आत्मा के प्रति भाव भरी श्रद्धांजलि।

-अंतिम-संस्कार से पूर्व दसानी परिवार, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा समाज साध्वीश्री जी को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए।

(1) मानव मंदिर मिशन के 36वें वार्षिक समारोह को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज साथ में हैं (बायें से) साध्वी समताश्री जी, महासती साध्वी मंजुलाश्री जी, साध्वी कनकलताजी एवं गुरूकुल के छात्र-छात्राएं।
(2) मानव मंदिर शिक्षा सहयोग के बच्चों द्वारा नृत्य नाटिका की प्रस्तुति का एक विहंगम दृष्य।

(1) मानव मंदिर गुरूकुल छात्रावास के प्रथम तल का दानवीर श्री के.सी. जैन (लंदन) द्वारा लोकार्पण करने के पश्चात् फोटो में हैं दायें से- श्री ललित नहाटा, श्री पवन कुमार बंसल, श्री सोहन राज खजांची, श्री के.सी. जैन, श्रीमती दर्शना जाटव, श्री आर.के. जैन एंव योगी अरूण।
(2) समारोह में विराजमान हैं बायें से- श्री सोहन राज खजांची, श्री के.सी. जैन, श्री आर.के. जैन, श्री सुभाष चंद्र तिवारी, श्रीमती प्रियंवदा तिवारी।

(1) मानव मंदिर, सुनाम के पदाधिकारी पूज्य गुरूदेव का शालार्पण करते हुए।
(2) मानव मंदिर महिला मंगल की बहनें गीत प्रस्तुत करते हुए।

-(बायें से) श्रीमती मंजु जैन, श्रीमती यास्मिन् किदवई, नगर-पार्षद्, तथा डॉ. जफरूल इस्लाम खान (अध्यक्ष- अल्पसंख्यक आयोग, दिल्ली सरकार) अपने विचार प्रकट करते हुए।

1. श्री युगराज जैन कवितामय मंच-संचालन करते हुए।
2. पूर्व रेलमंत्री श्री पवन कुमार बंसल अपने उद्गार प्रकट करते हुए।

(1) गुरूकुल के बालकों द्वारा वंदेमातरम की प्रस्तुति।
(2) गुरूकुल की बालिकाओं द्वारा गणेश वंदना।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

–मानव मंदिर गुरूकुल के छात्र मनीष जैन व उनकी टीम द्वारा योग-आसनों पर आधारित 150 पृष्ठों वाली योग-पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए (बायें से) सुमन बनर्जी, सोम बनर्जी, जे.के. शर्मा, योगी अरुण व मनीष

–मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों द्वारा अद्भुद योग प्रदर्शन की अलग-अलग सामुहिक मुद्राएं।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया